اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़र्ज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**करामाते ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه
सिने त़बाअ़त	:	ज़िल ह़ज **1444** हि., जूलाई **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**करामाते ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

करामाते हज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़्ह़ात का रिसाला : **"करामाते हज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी"** पढ़ या सुन ले उसे सिल्सिलए क़ादिरिय्या के बुज़ुर्गाने दीन के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमा और उस की बे ह़िसाब बख़्शिश कर दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देगा कि येह शख़्स निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे क़ियामत के दिन शुहदा के साथ रखेगा । (معجم اوسط، 5/252، حدیث:7235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

गल्ला पैसों से भर गया

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने भाई की आटे की दुकान पर गए और भाई को सलाम कर के वहीं बैठ गए । सलाम का जवाब देने के बा'द उन के भाई ने कहा : भाईजान ! आप यहां बैठिये और मेरी दुकान का ख़याल रखियेगा, मैं एक ज़रूरी काम से फ़ारिग़ हो कर आता हूं । वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुकान पर बैठे थे कि उन्हों ने बाज़ार में कुछ ग़रीब लोगों को देखा ।

बुज़ुर्ग ने उन्हें बुलाया और आटा बांटना शुरूअ़ कर दिया, यहां तक कि दुकान में मौजूद सारा आटा उन में तक़्सीम कर दिया। जब उन के भाई आए और येह सूरते ह़ाल देखी तो पूछा : आटा कहां गया ? बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : वोह तो मैं ने ग़रीबों में तक़्सीम कर दिया। येह सुन कर वोह कहने लगा : भाईजान ! आप ने तो मुझे कंगाल कर दिया है। भाई की येह बात सुन कर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उठे और मस्जिद में जा कर इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल हो गए। भाई ने जब गल्ला (पैसे रखने का बक्स) खोल कर देखा तो ह़ैरान रह गया कि वोह तो दिरहमों से भरा हुवा है। ह़िसाब लगाया तो पता चला कि एक दिरहम के बदले सत्तर दिरहम का नफ़्अ़ हो गया। वोह दिल में कहने लगा : येह सब मेरे भाई की बरकत से हुवा है। चन्द दिन बा'द वोह भाई बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास आया और सलाम किया। सलाम का जवाब देने के बा'द पूछा : भाई कैसे आना हुवा ? उस ने कहा : भाईजान ! कल आप मेरी दुकान पर कुछ देर के लिये तशरीफ़ लाएं तो येह मेरे लिये सआ़दत की बात होगी। बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : तुम येह बात इस लिये कह रहे हो कि उस दिन तुम्हें बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ हुवा था। अब मैं तुम्हारी दुकान पर नहीं आऊंगा और हर मरतबा ऐसे मुआ़मलात नहीं होते, इस में मेरा कोई कमाल नहीं। (عیون الحکایات، ص198)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! आप को मा'लूम है वोह बुज़ुर्ग जिन्हों ने अपने भाई की दुकान का सारा आटा ग़रीबों में तक़्सीम कर दिया और उन

की बरकत और करामत से दुकान का गल्ला पैसों से भर गया वोह कौन थे ? वोह अ़ज़ीम हस्ती मश्हूर बुज़ुर्ग हज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मुबारक नाम "मा'रूफ़ बिन फ़ीरोज़ कर्ख़ी" है, आप की दुआ़एं अक्सर क़बूल हुवा करती थीं, आप मश्हूर सूफ़ी और बड़े परहेज़ गार बुज़ुर्ग हैं। हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه आप के शागिर्दों में से हैं, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने 200 हि. में वफ़ात फ़रमाई, आप का मज़ार "बग़दाद शरीफ़" में दरियाए दिज्ला के बाएं किनारे अपनी बरकतें लुटा रहा है, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की क़ब्रे अन्वर के वसीले से लोग (बीमारियों से) शिफ़ा हासिल करते हैं, अहले बग़दाद कहा करते थे : आप का मज़ारे अक़्दस (हुसूले शिफ़ा और क़बूलिय्यते दुआ़ का) मर्कज़ है।

(رسالہ قشیریہ، ص26۔ الاعلام للزرکلی، 7/269۔ وفیات الاعیان، 4/445-446)

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और शानो शौकत का अन्दाज़ा आप के इन वाक़िआ़त से बख़ूबी लगाया जा सकता है, चुनान्चे

बग़दाद के बड़े आ़लिम

हज़रते क़ारी इस्माईल बिन शद्दाद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हम से पूछा : आप लोगों का तअ़ल्लुक़ कहां से है ? हम ने कहा : बग़दाद से। फिर पूछा : उस हिब्र (या'नी बड़े आ़लिम) का क्या हुवा ? हम ने पूछा : कौन ? इर्शाद फ़रमाया : मा'रूफ़ कर्ख़ी। फिर फ़रमाया : जब तक वोह आप लोगों में मौजूद हैं आप लोग हमेशा ख़ैर के साथ रहेंगे। (حلیۃ الاولیاء، 8/410، رقم:12714)

ज़मीनो आस्मान में शोहरत

हज़रते उ़बैद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स मुल्के शाम से हज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को सलाम करने के लिये हाज़िर हुवा, लोगों ने उस

से इस की वज्ह पूछी तो उस ने बताया : मैं ने ख़्वाब में देखा कि मुझ से कहा जा रहा है : मा'रूफ़ के पास जाओ और उन्हें सलाम करो क्यूं कि वोह ज़मीन वालों में भी मा'रूफ़ हैं और आस्मान वालों में भी मा'रूफ़ हैं। (या'नी इन का वली होना ज़मीन वालों और आस्मानों के फ़िरिश्तों में मश्हूर है।) (حلیۃ الاولیاء، 8/409، رقم:12708)

महब्बते इलाही से सरशार

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़्वाब में देखा, गोया आप अ़र्श के साए में हैं और **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों से फ़रमा रहा है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! येह कौन है ? फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : तू ज़ियादा जानता है। येह ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं और इन्हें तेरी महब्बत का ऐसा नशा चढ़ चुका है जो तेरी मुलाक़ात ही पर ख़त्म होगा। (حلیۃ الاولیاء، 8/410، رقم:12715)

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें ढूंडा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 130)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे, आप से बहुत सी करामात ज़ाहिर हुईं। आइये ! आप की चन्द करामात[1] पढ़ते हैं :

1... करामत की ता'रीफ़ : **अल्लाह** पाक के वली से जो ख़िलाफ़े आ़दत बात सादिर हो। (बहारे शरीअ़त, 1/58, ह़िस्सा : 1 ब तग़य्युरे क़लील) ख़िलाफ़े आ़दत बात से मुराद वोह काम है जो आ़म तौ़र पर हर किसी इन्सान से ज़ाहिर न होता हो मसलन हवा में उड़ना, पानी पर चलना वग़ैरा अफ़्आ़ल कि आ़म तौ़र पर आदमी न तो हवा में उड़ सकता है और न ही पानी पर चल सकता है। याद रखिये ! करामत का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) गुमराह है। (बहारे शरीअ़त, 1/269, ह़िस्सा : 1)

﴾1﴿ खोया हुवा बेटा मिल गया

ह़ज़रते अबू मुह़म्मद ज़रीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान है कि मेरे पड़ोसी ह़ज़रते मर्दवयह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुझे अपने पास आने का पैग़ाम भेजा, मैं आया तो आप ने बताया कि कई दिनों से मेरा बेटा ला पता है और औ़रतों के रोने धोने की वज्ह से मैं बड़ा परेशान हूं, आप सुब्ह़ मुझे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास ले जाएं। चुनान्चे मैं और वोह सुब्ह़ के वक़्त मस्जिद में ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, सलाम दुआ़ के बा'द ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : ऐ अबू बक्र ! कैसे आना हुवा ? ह़ज़रते मर्दवयह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मेरा बेटा कई दिनों से ग़ाइब है और औ़रतों के रोने की वज्ह से मैं बहुत परेशान हूं। ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने तीन मरतबा येह दुआ़ की : يَاعَالِمًا بِكُلِّ شَيْءٍ وَيَا مَنْ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ وَيَا مَنْ عِلْمُهٗ مُحِيْطٌ بِكُلِّ شَيْءٍ اَوْضِحْ لَنَا اَمْرَ ذَا الْغُلَامِ या'नी ऐ हर शै का इ़ल्म रखने वाले ! ऐ वोह ज़ात जिस से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ! ऐ वोह हस्ती जिस का इ़ल्म हर चीज़ को घेरे हुए है ! हम पर इस लड़के का मुआ़मला ज़ाहिर कर दे। फिर हम आप के पास से आ गए। ह़ज़रते अबू मुह़म्मद ज़रीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगले दिन सुब्ह़ फ़ज्र की नमाज़ से पहले ह़ज़रते मर्दवयह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का क़ासिद (पैग़ाम पहुंचाने वाला) मुझे बुलाने के लिये आया, मैं ने उस से पूछा : क्या ख़बर है ? उस ने बताया कि लड़का आ चुका है, जब मैं पहुंचा तो मैं ने देखा कि बच्चा ह़ज़रते मर्दवयह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सामने बैठा है। ह़ज़रते मर्दवयह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुझ से कहा कि एक तअ़ज्जुब ख़ेज़ बात सुनो, इस बच्चे ने बताया : मैं कूफ़े में चल रहा था कि दो शख़्स मेरे पास आए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे कूफ़े

से बाहर ले आए और मुझ से कहा : अपने घर की त़रफ़ चलो, मैं रास्ते में न कहीं बैठा हूं, न मैं ने कुछ खाया पिया है ह़ालां कि मैं 9 कूंओं या 90 कूंओं के क़रीब से गुज़रा हूं, मुझे खाना दो, आप लोगों के पास पहुंचने तक मैं ने कुछ नहीं खाया है। (حلیۃ الاولیاء، 8/406، رقم:12696)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾2﴿ ऊंट की बीमारी दूर हो गई

एक मरतबा ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास एक शख़्स आया, उस के साथ एक ऊंट भी था। वोह आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से कहने लगा : येह मेरा ऊंट है, मेरे घर के अफ़राद काफ़ी हैं और इसी के ज़रीए़ हमारा गुज़र बसर होता है। मैं इस पर मेह़नत मज़दूरी करता हूं और इसी पर सुवार हो कर अपने घर वालों के पास आता हूं और येह तीन दिन से बीमार है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : तुम क्या चाहते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं चाहता हूं कि आप **अल्लाह** पाक से मेरे लिये दुआ़ करें। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने लोगों से फ़रमाया : अपने भाई के लिये **अल्लाह** पाक से दुआ़ करो कि **अल्लाह** इस से मुसीबत दूर कर दे। आप ने हाथ उठाए फिर आप ने दुआ़ की। देखते ही देखते ऊंट की बीमारी दूर हो गई। (مناقب معروف الکرخی، ص160، بتغیر قلیل)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾3﴿ शराबियों की तौबा

ह़ज़रते इब्राहीम अत़रूश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम बग़्दाद शरीफ़ में दरियाए दिज्ला के किनारे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हमराह बैठे

हुए थे कि कुछ नौ जवान दफ़ बजाते, शराब पीते और खेलकूद करते हुए एक छोटी कश्ती में हमारे पास से गुज़रे। लोगों ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की : क्या आप इन्हें देख रहे हैं कि किस त़रह़ खुले आ़म **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी कर रहे हैं ? आप इन के लिये बद दुआ़ कीजिये। आप ने हाथ उठाए और दुआ़ की, कि ऐ **अल्लाह** पाक ! जिस त़रह़ तू ने इन्हें दुन्या में ख़ुशी बख़्शी है इसी त़रह़ आख़िरत में भी ख़ुश करना। लोगों ने अ़र्ज़ की : हम ने तो आप से बद दुआ़ करने का कहा था। आप ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक इन्हें आख़िरत की ख़ुशियां अ़त़ा फ़रमाएगा तो (मरने से पहले) इन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे देगा। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि वोह नौ जवान शराबो रबाब फेंक कर आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और आप के हाथ पर बैअ़त कर के बुरे कामों से तौबा कर ली। इस के बा'द आप ने अपने साथियों से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : तुम ने देखा कि किसी के ग़र्क़ हुए और तक्लीफ़ पहुंचे बिग़ैर ही हमें हमारी मुराद ह़ासिल हो गई। (احیاء العلوم، 4/190۔ تذکرۃ الاولیاء، 1/242 ملخصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

करम हो वासित़ा कुल औलिया का मेरा ईमां पे मौला ख़ातिमा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 316)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस वाक़िए़ से हमें येह दर्स मिलता है कि नफ़रत गुनाह से होनी चाहिये न कि गुनहगार से। अगर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उन के लिये बद दुआ़ फ़रमा देते तो वोह

हलाक हो जाते और उन की आख़िरत बरबाद हो जाती, लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उन के लिये हिदायत की दुआ़ फ़रमाई और आप की दुआ़ए ख़ैर की बरकत से वोह गुनाहों से तौबा कर के सीधे रास्ते पर आ गए। हमें भी चाहिये कि किसी के लिये हरगिज़ हरगिज़ बद दुआ़ न करें कि ह़दीसे पाक में इस से मन्अ़ किया गया है, चुनान्चे **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम न अपने आप को बद दुआ़ दो, न अपनी औलाद को बद दुआ़ दो और न अपने अम्वाल को बद दुआ़ दो, कहीं ऐसा न हो कि येह वोह घड़ी हो जिस में **अल्लाह** पाक से जिस अ़त़ा का भी सुवाल किया जाए तो वोह दुआ़ क़बूल होती हो। (مسلم، ص1226، حدیث:7515)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾4﴿ मुश्किल ह़ल हो गई

ह़ज़रते क़ारी अबुल ह़ज्जाज رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे यहां बच्चे की विलादत हुई, मेरे पास कुछ भी नहीं था, मैं ने इस बारे में ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की तो आप ने फ़रमाया : ऐ भाई ! **अल्लाह** पाक से दुआ़ करो, चुनान्चे वोह दुआ़ करते जाते और मैं आमीन कहता जाता और जब मैं दुआ़ करता तो वोह आमीन कहते, जब दुआ़ का सिल्सिला त़वील हुवा तो मैं उठा और चुपके से बाहर आ गया, अचानक मैं ने देखा कि एक सुवार मुझे पीछे से आवाज़ दे रहा है, उस के पास पैसों की एक थेली थी। उस ने मुझ से कहा : ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप से कहा है कि इस थेली को उस काम में ख़र्च करो जिस का आप ने उन से ज़िक्र किया था और उस थेली में सो दीनार या इस के क़रीब क़रीब थे।

(حلیۃ الاولیاء،8/407،رقم:12698) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

रब्बे करीम की रिज़ा में राज़ी

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के एक दीनी भाई ने एक बार आप की दा'वत की । आप ने एक नेक शख़्स का हाथ पकड़ा और उसे दा'वत में ले आए । जब उस नेक शख़्स ने अन्वाओ़ अक़्साम की चीज़ें देखीं तो उसे बुरा लगा और उस ने कहा : ऐ अबू मह़फ़ूज़ ! क्या आप यहां नहीं देख रहे ? आप ने फ़रमाया : मैं ने इन लोगों को इन चीज़ों के ख़रीदने का हुक्म नहीं दिया । जब उस ने ह़ल्वा देखा तो कहा : سُبْحٰنَ اللہ ! ऐ अबू मह़फ़ूज़ ! क्या आप यहां नहीं देख रहे ? आप ने फ़रमाया : मैं ने इन को इस के बनाने का हुक्म नहीं दिया । फिर जब उस ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म की मिठाइयां देखीं तो कहा : क्या आप यहां नहीं देख रहे ? आप ने फ़रमाया : तुम ने मुझ से बहुत सारे सुवालात कर लिये, मैं तो एक समझदार ग़ुलाम हूं, मेरा आक़ा जो मुझे खिलाता है मैं खा लेता हूं, जहां मुझे मेरी मेहमानी के लिये ठहराता है वहां ठहर जाता हूं । (حلیۃ الاولیاء،8/407،رقم:12699)

लम्बी उम्मीद नेक अ़मल में रुकावट

एक दिन ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने नमाज़ के लिये इक़ामत कही । फिर ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबी तौबा رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से इर्शाद फ़रमाया : आगे बढ़ कर हमें नमाज़ पढ़ाइये । इस की वज्ह येह थी कि आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इमामत नहीं कराते थे, बल्कि सिर्फ़ अज़ानो इक़ामत कहते थे जब

कि इमामत कोई और करता था। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबी तौबा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : अगर मैं आप को येह नमाज़ पढ़ाऊं तो दूसरी नमाज़ की इमामत नहीं करूंगा। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम दूसरी नमाज़ की उम्मीद करते हो ? हम लम्बी उम्मीदों से **अल्लाह** करीम की पनाह त़लब करते हैं क्यूं कि येह बेहतरीन अ़मल से रोक देती हैं। (حلیۃ الاولیاء، 8 405، حدیث:12688)

अल्लाह पाक पर भरोसा करो

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मस्लमा यामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स से फ़रमाया : **अल्लाह** पाक पर भरोसा करो यहां तक कि वोही तुम्हारा मुअ़ल्लिम (सिखाने वाला), वोही तुम्हारा अनीस (मह़ब्बत करने वाला) और तुम्हारी अ़र्ज़ियां उसी की बारगाह में पेश हों और मौत की याद तुम्हारे साथ ऐसे हो कि तुम से कभी जुदा न हो। जान लो कि जो भी आज़्माइश व मुसीबत तुम पर नाज़िल हो उस से छुटकारा उस को छुपाए रखने में है क्यूं कि लोग तुम्हें न फ़ाएदा दे सकते हैं, न नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, न तुम से कुछ रोक सकते हैं और न ही तुम्हें कुछ दे सकते हैं। (حلیۃ الاولیاء، 8/404، حدیث:12683)

तिजारत की तरग़ीब

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते बक्र बिन ख़ुनैस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते हुए सुना कि ख़रीदो और बेचो अगर्चे क़ीमते ख़रीद ही पर हो क्यूं कि उस माल में भी ऐसे ही बरकत होती है जैसे ज़राअ़त में नश्वो नमा होती है। (حلیۃ الاولیاء، 8/408، حدیث:12704)

अल्लाह की मा'रिफ़त काफ़ी है

किसी शख़्स ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मह़फ़ूज़ ! मुझे बताइये कि आप को किस चीज़ ने मख़्लूक़ से अ़लाह़दगी और इबादते इलाही पर उभारा ?" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ामोश रहे तो उस ने ख़ुद ही कहा : मौत की याद ने ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "मौत क्या चीज़ है ?" उस ने कहा : क़ब्र और बरज़ख़ की याद ने ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "क़ब्र क्या शै है ?" फिर उस ने कहा : जहन्नम के ख़ौफ़ और जन्नत की उम्मीद ने ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह क्या चीज़ है ? बेशक येह तमाम चीज़ें एक बादशाह के क़ब्ज़े में हैं, अगर तू उस से महब्बत करे तो वोह तुझे सब कुछ भुला दे और अगर तेरे और उस के दरमियान जान पहचान हो जाए तो वोह तुझे इन तमाम के मुक़ाबले में काफ़ी हो जाए ।" (احیاء العلوم، 5/22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

फ़रामीने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ऐ आशिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जहां अपनी सीरतो किरदार के ज़रीए़ लोगों की इस्लाह़ फ़रमाई वहीं अपने पाकीज़ा फ़रामीन से भी लोगों की ज़िन्दगियों में इन्क़िलाब पैदा फ़रमाया, चुनान्चे आप फ़रमाते हैं :

❀ "दुन्या चार चीज़ों का नाम है : ﴾1﴿ माल ﴾2﴿ कलाम ﴾3﴿ सोना और ﴾4﴿ खाना । क्यूं कि माल सरकशी (ना फ़रमानी) का सबब है, कलाम लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) में मुब्तला कर देता है, नींद ग़ाफ़िल कर देती है और खाना दिल की सख़्ती का बाइ़स है ।" (त़बक़ाते औलिया, स. 285)

❀ रब्बे करीम की ना फ़रमानी करते हुए रह़मत की उम्मीद लगाना जहालत और ह़माक़त है। (حلیۃ الاولیاء، 8/411، رقم:12718 ملتقطاً)

❀ ऐ मिस्कीन ! तू कब रोएगा और कब समझदार बनेगा ? मुख़्लिस बन और छुटकारा ह़ासिल कर। (حلیۃ الاولیاء، 8/411، رقم:12718 ملتقطاً)

❀ मुश्किल घड़ी में जिस चीज़ की ह़ाजत हो उसे ईसार कर देना सख़ावत है। (حلیۃ الاولیاء، 8/411، رقم:12718 ملتقطاً)

❀ सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मा बा'ज़ अवक़ात दिल की कैफ़िय्यत को इस क़दर तबाह कर देता है कि फिर सारी उ़म्र दिल राहे रास्त (या'नी सीधे रास्ते) पर नहीं आता।

❀ बा'ज़ अवक़ात वोही ख़राब लुक़्मा साल भर तक तहज्जुद की ने'मत से आदमी को मह़रूम कर देता है।

❀ बा'ज़ अवक़ात एक बार बद निगाही करने वाला अ़र्से तक तिलावते क़ुरआने करीम की सआ़दत से मह़रूम कर दिया जाता है।

(منہاج العابدین، ص97 ملتقطاً)

❀ बन्दे का बे फ़ाएदा कलाम करना **अल्लाह** पाक की मदद से मह़रूमी की अ़लामत है। (حلیۃ الاولیاء، 8/405، رقم:12691)

❀ **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : मेरे बन्दों में मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब वोह मसाकीन हैं जिन्हों ने मेरा फ़रमान सुना और मेरा हुक्म माना और मेरे ज़िम्मे उन का ए'ज़ाज़ येह है कि मैं उन्हें दुन्या न अ़ता करूं ताकि वोह (दुन्या से बे रग़बत रह कर) मेरी इबादत की त़रफ़ मुतवज्जेह रहें।

(تہذیب الآثار للطبری، 2/301، رقم:510)

❀ ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा गया : दुन्या को दिल से कैसे निकाला जाए ? इर्शाद फ़रमाया : ख़ालिस मह़ब्बत और अच्छे मुआ़मले के ज़रीए़ और ख़ालिस मह़ब्बत की तीन अ़लामतें हैं : ﴿1﴾ वफ़ा बिग़ैर किसी ख़ौफ़ो ख़त़र के हो ﴿2﴾ अ़त़ा बिग़ैर सुवाल के हो ﴿3﴾ ता'रीफ़ बिग़ैर जूदो सख़ावत के हो और औलिया की तीन अ़लामतें हैं : ﴿1﴾ उन के इरादे और अफ़्कार **अल्लाह** पाक के लिये होते हैं ﴿2﴾ उन की मसरूफ़िय्यत **अल्लाह** पाक के लिये होती है और ﴿3﴾ वोह हर चीज़ से दामन छुड़ा कर **अल्लाह** पाक की त़रफ़ दौड़ते हैं। (حلیۃ الاولیاء، 8/411، رقم:12718 ملتقطاً)

❀ जिस ने **अल्लाह** पाक पर भरोसा किया तो वोह उसे नफ़्अ़ देगा और जिस ने उस के लिये आ़जिज़ी की तो वोह उसे बुलन्द रुत्बा अ़त़ा फ़रमाएगा। (سیر اعلام النبلاء، 8/218، رقم:1425)

❀ जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अ़मल का दरवाज़ा खोल देता है और जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अ़मल का दरवाज़ा बन्द कर देता है। (سیر اعلام النبلاء، 8/217، رقم:1425)

❀ लम्बी उम्मीद नेक और अच्छे काम से रोक देती है।

(حلیۃ الاولیاء، 8/408، حدیث:12703)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दुआ़एं

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दुआ़ओं में येह दुआ़ भी थी : (ऐ **अल्लाह** पाक !) हमें उन लोगों में से बना दे जो तुझ से मुलाक़ात पर

ईमान रखते हैं, तेरे फ़ैसले पर राज़ी रहते हैं, तेरे दिये हुए पर ख़ुश रहते हैं और तुझ से ऐसे डरते हैं जैसे डरने का ह़क़ है। (حلیۃ الاولیاء، 8/405، حدیث: 12687)

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे : "اَللّٰھُمَّ یَامَنْ وَفَّقَ اَھلَ الْخَیرِ لِلْخَیرِ وَاَعَانَھُمْ عَلَیْہِ وَفِّقْنَا لِلْخَیرِ وَاَعِنَّا عَلَیْہِ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! ऐ वोह ज़ात जिस ने नेक बन्दों को नेक कामों की तौफ़ीक़ दी और इस पर उन की मदद भी फ़रमाई ! हमें भी भलाई की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इस पर हमारी मदद भी फ़रमा ।" (الروض الفائق، ص185)

मा'रूफ़ कर्ख़ी के अवरादो वज़ाइफ़

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन का येह दस्तूर रहा है कि वोह अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को मसाइब व अमराज़ से नजात, रिज़्क़ में बरकत और दीगर अहम उमूर से मुतअ़ल्लिक़ अवरादो वज़ाइफ़ अ़त़ा फ़रमाते हैं। ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने भी वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुरीदीन को अवरादो वज़ाइफ़ अ़त़ा फ़रमाए हैं, चुनान्चे

अब्दालों की फ़ज़ीलत ह़ासिल करने का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना 10 मरतबा येह कलिमात "اَللّٰھُمَّ اَصْلِحْ اُمَّۃَ مُحَمَّدٍ اَللّٰھُمَّ فَرِّجْ عَنْ اُمَّۃِ مُحَمَّدٍ اَللّٰھُمَّ ارْحَمْ اُمَّۃَ مُحَمَّدٍ या'नी ऐ **अल्लाह** ! उम्मते मुह़म्मदिय्यह की इस्लाह़ फ़रमा, इन की तक्लीफ़ें दूर कर दे और इन पर रह़्म फ़रमा ।" कहेगा, उसे अब्दालों में लिख दिया जाएगा । (حلیۃ الاولیاء، 8/410، حدیث: 12716)

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने बैतुल्लाह शरीफ़ से रुख़्सत होते हुए कहा : اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ عَدَدَ عَفْوِکَ عَنْ خَلْقِکَ या'नी ऐ

अल्लाह ! तेरे लिये इतनी ता'दाद में ह़म्द हो जितनी ता'दाद में तू अपनी मख़्लूक़ को मुआ़फ़ करता है । फिर जब आइन्दा साल वोह शख़्स दोबारा आया और येही कलिमात कहे तो उस ने एक आवाज़ सुनी कि पिछले साल जब से तुम ने येह कलिमा कहा था उस वक़्त से हम इस (के सवाब) को नहीं गिन सके । (حلیۃ الاولیاء، 8/410، حدیث:12717)

ह़ाजत पूरी करने वाले कलिमात

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अन्सारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स अपने बिस्तर से अ़लाह़दा होते वक़्त येह कलिमात कहे : ''سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ فَاِنَّهُمَا بِيَدِكَ لَا يَمْلِكُهُمَا اَحَدٌ سِوَاكَ'' या'नी **अल्लाह** पाक है और तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं, **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं **अल्लाह** से मग़्फ़िरत मांगता हूं । ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल और तेरी रह़मत का सुवाल करता हूं येह दोनों तेरे क़ब्ज़े में हैं, तेरे सिवा कोई इन का मालिक नहीं ।'' तो **अल्लाह** करीम बन्दों की ह़ाजतें पूरी करने पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते या'नी ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से इर्शाद फ़रमाता है : ऐ जिब्रील ! मेरे बन्दे की ह़ाजत पूरी कर दो । (حلیۃ الاولیاء، 8/410، حدیث:12718)

ह़ज़रते या'क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ह़स्सान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि मुझे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें दस ऐसे कलिमात न सिखाऊं कि जिन में से पांच दुन्या और पांच आख़िरत के

लिये हैं, जो भी इन कलिमात से **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ करता है इन्आ़माते बारी तआ़ला पाता है।" मैं ने अ़र्ज़ की, कि इन्हें तह़रीर फ़रमा दें, तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! मैं तह़रीर नहीं करूंगा बल्कि मैं भी इसी त़रह़ बार बार तुम्हें पढ़ कर सुनाऊंगा जैसा कि ह़ज़रते बक्र बिन हुबैश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुझे सुनाए थे।" वोह कलिमात येह हैं :

❀ حَسْبِيَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى لِدِيْنِيْ، حَسْبِيَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لِدُنْيَايَ، حَسْبِيَ اللهُ الْكَرِيْمُ لِمَا اَهَمَّنِيْ، حَسْبِيَ اللهُ الْحَكِيْمُ الْقَوِيُّ لِمَنْ بَغٰى عَلَيَّ، حَسْبِيَ اللهُ الشَّدِيْدُ لِمَنْ كَادَنِيْ بِسُوْٓءٍ، حَسْبِيَ اللهُ الرَّحِيْمُ عِنْدَ الْمَوْتِ، حَسْبِيَ اللهُ الرَّؤُوْفُ عِنْدَ الْمَسْئَلَةِ فِي الْقَبْرِ، حَسْبِيَ اللهُ الْكَرِيْمُ عِنْدَ الْحِسَابِ، حَسْبِيَ اللهُ اللَّطِيْفُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ، حَسْبِيَ اللهُ الْقَدِيْرُ عِنْدَ الصِّرَاطِ، حَسْبِيَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۔

तरजमा : मुझे मेरे दीन के मुआ़मले में **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, मुझे मेरी दुन्या के मुआ़मलात में भी **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, जिन बातों ने मुझे ग़मज़दा कर दिया है उन में भी मुझे करीम **अल्लाह** ही काफ़ी है, मुझ पर सरकशी इख़्तियार करने वाले के मुआ़मले में भी मुझे ह़िक्मतो कु़व्वत वाला **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, जो मुझे धोका व फ़रेब देना चाहे उस के मुआ़मले में भी मुझे शिद्दतो त़ाक़त वाला **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, मौत के वक़्त भी मुझे रह़्म फ़रमाने वाला **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, क़ब्र में सुवाल जवाब के वक़्त भी मुझे **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है जो कि रऊफ़ है, ह़िसाब के वक़्त भी मुझे करम फ़रमाने वाला **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, मीज़ान के पास भी मुझे लुत़्फ़ो करम फ़रमाने वाला **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, पुल सिरात़ से गुज़रते वक़्त भी

मुझे कुदरत वाला **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है, मुझे **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है जिस के सिवा कोई मा'बूद (इबादत के लाइक़) नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया है और वोही अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

और इस के बा'द यूं दुआ़ करे

اَللّٰهُمَّ يا هادِىَ الْمُضِلِّيْنَ وَ رَاحِمَ الْمُذْنِبِيْنَ وَمُقِيْلَ عَثَرَاتِ الْعَاثِرِيْنَ اِرْحَمْ عَبْدَكَ ذَا الْخَطَرِ الْعَظِيْمِ الْمُسْلِمِيْنَ كُلِّهِمْ اَجْمَعِيْنَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الْاَحْيَآءِ الْمَرْزُوْقِيْنَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصَّالِحِيْنَ اٰمِيْنَ۔ يا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ!

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! ऐ गुमराहों को हिदायत देने वाले ! और ऐ गुनाहगारों पर रह्म फ़रमाने वाले ! ऐ ख़त़ाकारों की ख़त़ाएं मुआ़फ़ फ़रमाने वाले ! ऐ अ़ज़ीम क़द्रो मन्ज़िलत के मालिक ! अपने (इस) बन्दे और तमाम मुसल्मानों पर रह्म फ़रमा और हमें उन रिज़्क़ दिये गए ज़िन्दों में से बना दे जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया या'नी नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और नेक लोगों में से। آمين! يا رَبَّ الْعَالَمِيْن !

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते उ़त्बा गुलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़्वाब में देखा गया तो उन्हों ने (दुख़ूले जन्नत का सबब पूछने पर) बताया कि मैं इन्ही दुआ़ओं की बरकत से जन्नत में दाख़िल हुवा हूं।

मज़्कूरा दुआ़ के बा'द येह दुआ़ मांगे

اَللّٰهُمَّ عَالِمَ الْخَفِيَّاتِ، رَفِيْعَ الدَّرَجَاتِ، ذَا الْعَرْشِ، تُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِكَ عَلٰى مَنْ تَشَآءُ مِنْ عِبَادِكَ، غَافِرَ الذَّنْبِ وَقَابِلَ التَّوْبِ، شَدِيْدَ الْعِقَابِ، ذَا الطَّوْلِ، لَآ اِلٰـهَ اِلَّآ اَنْتَ، اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! ऐ मख़्फ़ी व पोशीदा अश्या को जानने वाले ! ऐ दरजात को बुलन्द करने वाले ! ऐ अ़र्श के मालिक ! रूह़ तेरे हुक्म से तेरी मन्शा व मरज़ी के मुत़ाबिक़ तेरे बन्दों में डाली जाती है, ऐ गुनाह मुआ़फ़ करने वाले ! और ऐ तौबा क़बूल फ़रमाने वाली ज़ाते बा बरकात ! ऐ सख़्त अ़ज़ाब के मालिक ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तेरी ही त़रफ़ लौटना है।

ह़ज़रते इब्राहीम साइग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : "आप को किस शै के सबब नजात मिली ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बताया कि येही मज़्कूरा दुआ़एं मेरी नजात का सबब हैं। (قوت القلوب، 1/24)